छिः! थू! धिक! लानत है!

सत्यव्रत

'जनसत्ता' में प्रकाशित एक खबर के अनुसार, **लीलाधर जुगाड़ी** (पहले ये **लीलाधर जगूड़ी** कहलाते थे!) उत्तरांचल विधान सभा चुनाव में कांग्रेस का टिकट पाने के लिए जुगाड़ भिड़ाने में व्यस्त हैं।

आम पाठक तो इन्हें नहीं जानते होंगे लेकिन **परमानन्द श्रीवास्तव** जैसे लोहियावाद से मार्क्सवाद में संक्रमण किये हुए स्वनामधन्य आलोचक इन्हें शीर्षस्थ कलावंत वामपंथी कवि करार देते रहे हैं। जुगाड़ी जी हिकमत, तिकड़म और जुगाड़ से नीचे से ऊपर उठे, सभी चुनावबाज दलों की सरकारों के मातहत, उत्तर प्रदेश के सूचना विभाग में सेवारत रहे। उधर साहित्याकाश पर भी आपकी चमक बढ़ती रही। आलोचक खुश रहे और "तू मेरी सूंघ, मैं तेरी सूंघूं" की रस्म के मुताबिक बिरादर कविगण भी आपके मुखड़े की पालिश चमकाते रहे।

कांग्रेस टिकटार्थियों की लाइन में जुगाड़ी जी लीला करना विशेष ध्यानाकर्षण का विषय इसलिए भी है कि अभी कुछ ही महीने पहले उत्तरांचल के पूर्व मुख्यमंत्री, भाजपाई नित्यानन्द स्वामी के विशेष सूचना सलाहकार के तौर पर काम करते हुए जुगाड़ी जी ने नवनीत-लेपन के विगत समस्त कीर्तिमानों को ध्वस्त करते हुए उन्हें **"उत्तरांचल पिता"** तक की उपाधि दे डाली थी। उत्तराखण्ड की जनता तो जनता, नरमपंथी बुद्धिजीवियों तक को जुगाड़ी जी का "हद से यूं गुजर जाना" कुछ जंचा नहीं। **'नैनीताल समाचार'** ने जुगाड़ी के इस कुकृत्य पर यूं टिप्पणी की, "नित्यानंद स्वामी आपके पिता अवश्य हो सकते हैं, लेकिन उन्हें उत्तरांचल पिता कहकर सम्पूर्ण उत्तराखण्ड की संघर्षशील जनता का अपमान करने का हक आपको किसने दिया जगूड़ी जी?"

वीभत्स रस से भरपूर इस पटकथा का पूर्वभाग यह है कि उ. प्र. सूचना विभाग में काम करते हुए अपनी चारण-प्रतिभा से जुगाड़ी जी ने अपने स्वामियों को इस कदर प्रभावित कर लिया था कि एक स्वामी—नित्यानन्द के भाग्य से जब उत्तरांचल के मुख्यमंत्री पद का छींका टूटा तो वे अपनी पूंछ में बांधकर जुगाड़ी जी को भी वहां ले गये। चूंकि जुगाड़ी जी अवकाश-प्राप्ति की उमर को पहुंच चुके थे, इसलिए उनकी खातिर स्वामीजी ने 'सूचना सलाहकार' का विशेष पद सृजित किया। जुगाड़ी जी की किस्मत से जलने वालों ने भाजपा के शिखर-पुरुषों के कान भरने शुरू किये कि जुगाड़ी तो वामपंथी है, घात कर सकता है। जुगाड़ी जी डरे। उन्होंने तत्काल स्वामी जी को 'उत्तरांचल पिता' कहते हुए आश्वस्त किया कि "वामपंथी तो मैं कविता के प्रदेश में हूं, यहां तो मैं आपका कुत्ता हूं।" लेकिन विडम्बना यह कि सत्ता-राजनीति की दौड़ में नित्यानन्द स्वामी भाजपाइयों के लिए 'सौदागर के बूढ़े घोड़े' के माफिक होने के चलते उठाकर किनारे धर दिये गये और जुगाड़ी जी वह हो गये जो न घर का होता है न घाट का! पर वह जुगाड़ी क्या जो हार मान जाये। जुगाड़ी जी ने वामपंथ से बस एक चीज सीखी थी—लगे रहने के मामले में उद्दाम आशावादी होना! सो वे लगे रहे। भाजपा की जगह कांग्रेस के दरवाजे जा लगे।

सुनने में आया है कि उत्तराखण्ड में गिरगिट और केंचुए कहीं नहीं दीखते। जुगाड़ी जी से शर्माकर वे मुंह छुपाये फिर रहे हैं।

●

वे कवि महोदय शायद जुगाड़ी जी के ही पूर्वज थे जिन्होंने लिखा था, "हमारे जार्ज पंजुम को भगवन चिरायू कीजिए।" लोककवियों के समान्तर ऐसे चारण कवियों की परम्परा पुरानी रही है जो राजाओं की विरुदावली गाकर सिक्के बटोरा करते थे। जुगाड़ी जी ने उस कला-कौशल को महीन बनाया है। कविता की दुनिया में वे वामपंथी हैं और उस दुनिया से अर्जित शब्द-चातुर्य के सहारे सत्ता और पद-ओहदे की दुनिया में वे चारणाधिराज हैं, भाट-शिरोमणि हैं, उत्कृष्टतम चम्मच हैं, चमकती हुई जादुई सुनहली पूंछ हैं जिसे सुविधानुसार इस पिछवाड़े से उस पिछवाड़े जा सटने का वरदान प्राप्त है।

जुगाड़ी जी के एक पितर पुरुष कविवर श्रीकांत वर्मा थे, कविता की दुनिया में अकविता से जनवादी कविता तक उनकी 'रेंज' थी तथा राजनीति में मार्क्सवाद से बरास्ता लोहियावाद "कांग्रेसवाद" तक। आपातकाल के हत्यारे काले दिनों में इन्दिरा गांधी के खासुलखास थे, उनके लिए नारे गढ़ते थे और गुण्डा गिरोह के सरगना संजय गांधी के पोस्टरों के रूपाकार सजाते थे। सेवा के पुरस्कार स्वरूप वे राज्यसत्ता सदस्य भी रहे और उनके मरणोपरान्त उनकी पत्नी को भी यह पदसुख मिला। आज का कुख्यात आर्थिक अपराधी, करोड़पति अभिषेक वर्मा उन्हीं का पुत्र है।

श्रीकान्त वर्मा की एक खासियत रही कि वे अंत तक कांग्रेस के दरवाजे पर ही बंधे रहे। पर जुगाड़ी जी पैंतरापलट-कौशल में उन्हें पीछे छोड़ते हुए चन्द एक महीनों के भीतर ही भाजपा से कांग्रेस के घाट जा लगे। देखें, वहां अपनी विश्वसनीयता सिद्ध करने के लिए वे अब किसको किसका पिता सिद्ध करते हैं!

●

कुछ दशकों बाद हमारे समय को जब याद किया जायेगा तो तमाम विशिष्ट

अभिलाक्षणिकताओं के साथ ही, संस्कृति की दुनिया में व्याप्त अवसरवाद के घृणिततम रूपों की भी चर्चा अवश्य की जायेगी।

जुगाड़ी कोई अकेले नहीं हैं। "मार्क्सवादी आलोचक-शिरोमणि" नामवर सिंह और बारीक-महीन रेशमी कतान वाली कथित जनवादी काव्यधारा के कविकुल गुरु केदारनाथ सिंह घुटे-घुटाये बुर्जुआ राजनीतिज्ञ चन्द्रशेखर को "युगपुरुष" घोषित कर रहे हैं! क्रान्ति और कविता पर बोलते-बोलते नामवर सिंह एक भाजपाई महिला और एक उच्च पुलिस अधिकारी की पुस्तक का विमोचन करने चले जाते हैं और वहां 'अहो-अहो' करते हुए लगभग गश खा जाते हैं। जीवित पितर-परम्परा बने हुए त्रिलोचन शास्त्री एक भाजपाई मंत्री के हाथों सुलभ शौचालय वालों का पुरस्कार ग्रहण करते हैं और कई-कई लखटकिया पुरस्कार पाने के बावजूद केदारनाथ सिंह शहीद शंकर गुहा नियोगी के हत्यारों से पुरस्कार लिये बिना चैन नहीं पाते। उधर युवा वामपंथी आलोकर पुरुषोत्तम अग्रवाल विश्वनाथ प्रताप सिंह की कविता और कला पर मुग्ध होकर घोषित कर देते हैं कि उन जैसा संवेदनशील व्यक्ति ही भारतीय राजनीति को नई दिशा दे सकता है! पद-पीठों-पुरस्कारों की राजनीति से क्षुब्ध युवा कवि नीलाभ लिखते हैं : "हमको दे दो एक वजीफी, हमको दे दो एक इनाम" और कुछ दिन बीतते ही महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय की परियोजनाओं से नत्थी होकर अशोक वाजपेयी के खास बन जाते हैं।

आज से आधी सदी पहले मुक्तिबोध ने लिखा था :

"देख कीर्ति के नितम्ब इठलाते–
लालच ने पुकार की
पीड़ा भरी हुंकार की,
लोभ-ईर्ष्या, तब रंगीन
उड़न-छू पंख पसारकर
उन्हीं नितम्बों पर जा बैठे
उनका रंग उभारकर,
नितम्ब बढ़ते गये–
प्रतिष्ठा के महत्व के सार थे।"
...

आज लोभ-ईर्ष्या की हुंकार से दिग-दिगन्त गूंज रहे हैं। कवि-कलावन्तों की निगाहों के सामने बस एक ही चीज है–कीर्ति के इठलाते नितम्ब।

विडम्बना यह है कि इन अवसरवादियों में जो सबसे आगे हैं, उन्हें वामपंथी माना जाता है। क्या सचमुच ये वामपंथी हैं? गेहूं के खेत में गेहूं के पौधे जैसे रूप रंग वाला ही एक खतरनाक खर-पतवार पाया जाता है जिसे किसान "गेहूं का मामा" कहते हैं। ये सभी सत्तासेवी, अवसरवादी कवि-लेखक-आलोचक दरअसल गेहूं के खेत में पनपने वाले "गेहूं के मामा" हैं। ऐसा नहीं कि इनकी रचनाओं में छद्म वामपंथ की शिनाख्त नहीं की जा सकती! बखूबी की जा सकती है। लेकिन कौन करेगा? वे गंदे धंधेबाज गुटबाज आलोचक, जिनका जमीर कोठे के दलालों से भी गया-गुजरा है?–कतई नहीं। वे तो स्वयं सत्ता-दरबार के विशेष पत्तल चाटने वाले लोग हैं!

सच यह है कि साहित्य की दुनिया में चूंकि आज भी वामपंथ का ही सिक्का चलता है, इसलिए ये सभी कलावंत लोग रचनाओं में वामपंथ का छद्म रचते हैं और जीवन में निष्ठापूर्वक सत्ता-धर्म निभाते हैं। आप कभी राजधानी के किसी आयोजन को देखिये–दारू-बोटी-गाड़ी-बंगला वाले "वामपंथी" गुनीजनों की धकापेल देखकर सारा माजरा समझ में आ जायेगा। साहित्य-कला की दुनिया में ये वामपंथी अभिजन वस्तुतः 'ट्रोजन हॉर्स' की भूमिका ही निभा रहे हैं।

साहित्य की दुनिया के इन्हीं खेल-तमाशों की पृष्ठभूमि में, लीलाधर जुगाड़ी ने चाटुकारिता के परचम पर जो नये सलमा-सितारे टांके हैं, उसे देखकर तथा नामवर-केदार जैसों की ऐसी ही हरकतों को देखकर तथा नामवर-केदार जैसों की ऐसी ही हरकतों को देखकर हमें दरबारी संस्कृति से जुड़ा एक पुराना किस्सा याद आ रहा है। रोम के पतनशील दौर का अतिभ्रष्ट और आततायी सम्राट नीरो समलैंगिक था। उसने जब धूमधाम के साथ एक लौंडे से ब्याह रचाया तो उसके दरबारियों ने जय-जयकार करते हुए उसे पुत्रवान होने की शुभकामनाएं दीं। आज के जुगाड़ी गण क्या नीरो के दरबारियों को भी मात नहीं दे रहे हैं?

साहित्य में रुचि रखने वाले युवाओं से तो हम बस इतना ही कहना चाहेंगे दरबारी मुसाहिबों की यह जमात, हत्यारों के दरबार में राग मल्हार गाने वाले कुलीन कलावन्तों की यह मण्डली, जनता की संस्कृति के शिविर में विभीषणों, जयचन्दों, मीरजाफरों की भूमिका निभा रही है। ये वे लोग नहीं हैं जो **ब्रेष्ट, लू शुन, नाज़िम हिकमत, तो हू, प्रेमचन्द, निराला, मुक्तिबोध** आदि की परम्परा को आगे विस्तार दें। ये महान नाम भी इनकी लेखनी और इनके मुंह से निकलकर गन्दे हो जाते हैं। संस्कृति की दुनिया में आज जिस क्रान्तिकारी नवजागरण और प्रबोधन की आवश्यकता है, यह इनके बस का नहीं। युवा पीढ़ी को इन निठल्ले, कायर, विलासी लफ्फाजों की जिन्दगी की और इनकी नकली वामपंथी रचनाओं की पड़ताल करनी होगी। इन भितरघातियों से चेतावनी के तौर पर बस इतना ही कहा जा सकता है, "सावधान! इतिहास के अभिलेखागार में सब कुछ की इन्दराजी हो रही है।"

आज से कुछ दशकों बाद, उस समय की युवा पीढ़ी से आज की युवा पीढ़ी जब इन दिनों के बारे में बातें करेगी तो ब्रेष्ट से कुछ शब्द उधार लेकर वर्तमान सांस्कृतिक परिवेश का बयान कुछ इस तरह से करेगी:

"हम एक अंधेरे समय में सयाने हुए
जब भेड़िये राग मल्हार गा रहे थे
और हत्यारों के सेवक
साहित्य की दुनिया में
वामपंथ की भाषा बोल रहे थे।"